हिन्दी साहित्य

को

लेखिकाओं का योगदान

संपा. उषा यादव

हिन्दी साहित्य को लेखिकाओं का योगदान

संपा. उषा यादव

नाम	उषा यादव
जन्म	28 अप्रैल 1983
शिक्षा	एम ए हिन्दी. एम फिल बी. एड.नेट. सेट
प्रकाशित रचनाऐं	विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे आलेख प्रकाशित
रुचि	पठन–पाठन
सम्मान	गीना देवी शोधश्री सम्मान
सम्प्रति	पीएच डी शोधरत हिन्दी विभाग– मौलाना आजाद उर्दू विश्वविद्यालय. हैदराबाद. तेलंगाना–500032
सम्पर्क	9948560575,8074091928
मेल	ushayadav.741@gmail.com

ISBN:978-93-89047-26-4

9789389047264

प्रधान कार्यालय :

गीना प्रकाशन

202, [illegible] भिवानी-127021 [illegible]

प्रधान कार्यालय :
गीना प्रकाशन
202, पुराना हाउसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
मोबाइल : 9466532152, 8708822674
ई-मेल : ginapk222@gmail.com

उपस्थापक गीना प्रकाशन ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली से पुस्तक प्रकाशित करवाकर मुख्य कार्यालय से वितरित की।

ISBN 978-93-89047-26-4
© लेखक
मूल्य ₹ 700

प्रथम संस्करण : सन् 2021

प्रकाशक : सानिया पब्लिकेशन
323, गली नं. 15,
कर्दमपुरी एक्सटेंशन,
दिल्ली-110094
मोबाइल : 8383042929, 7292063887
Email : saniapublicationindia@gmail.com

आवरण : एम. सलीम

शब्द संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Hindi Sahitya Ko Lekhkayon Ka Yogdan
Price Rs. 700.00

अनुक्रम

1. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में अभिव्यक्ति दलित चेतना — 13
उषा यादव
2. शैक्षणिक समस्याएं : सुशीला टाकभौरे की कहानियों में — 18
डॉ. नरेश कुमार सिहाग
3. संत महिलाओं का हिन्दी साहित्य को योगदान — 22
गजानन्द मीणा
4. महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना — 32
डॉ. अमनदीप कौर
5. प्रवासी लेखिकाओं का हिन्दी साहित्य को योगदान — 38
अनामिका भुसाल
6. बदलती सोच का आईना-दोहरा अभिशाप — 43
डॉ. अनिला मिश्रा
7. शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी-जीवन का चित्रण — 50
डॉ. बिजेंद्र कुमार
8. प्रभा खेतान के उपन्यासों में व्यक्त नारी चेतना — 58
बिन्दु के. पिल्लाई
9. डॉ. प्रभा पंत की कहानियों में विविध आयाम — 64
चंद्रावती जोशी
10. नारी अंतर्मन की झलक : उषा प्रियम्वदा की कहानियों में — 73
डॉ. अनिता पाटिल
11. प्रवासी लेखिकाओं का हिंदी साहित्य को योगदान — 79
डॉ. सर्वमंगला स. कमतगी
12. महिला काव्य लेखन और सामाजिक सरोकार — 83
डॉ. शारदा प्रसाद
13. 21 वीं सदी की महिला साहित्यकार और साहित्य — 91
डॉ. गीतु खन्ना

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी-जीवन का चित्रण

डॉ. बिजेंद्र कुमार
सहायक प्रोफेसर, हिंदी- विभाग,
राधा कृष्ण सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कैथल, हरियाणा, पिन–136027
ईमेल– bijenderkumar30@gmail.com

प्रस्तावना

इस धरा पर जब से जीव का जन्म हुआ है तभी से एक नए युग की शुरुआत हुई है। मानव जन्म के साथ एक नई सोच एवं नई दृष्टि का शुभारंभ हुआ। जिसने अपनी बुद्धि कौशल द्वारा नए–नए संसाधनों का निर्माण किया और अपने जीवन को उत्तम बनाने के लिए परिवार, समाज एवं राष्ट्र के साथ बंधन स्थापित किए। वह समाज में रहकर ही सुरक्षित जीवन का सपना साकार करने लगा। इस समाज की दो धुरी बनी– नर और नारी। इनमें दोनों का अपना अस्तित्व है। लेकिन सृष्टि की निर्मात्री एवं नर की जन्मदात्री के रूप में नारी का विशेष महत्व है। मानव जीवन का प्रारंभिक काल जिसे हम वैदिक काल भी कहते है, में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। भारतीय संस्कृति की भी यही श्रेष्ठता थी कि वहाँ नारी को जननी मानकर उसकी पूजा की जाती थी। यहाँ नारी माँ, बहन, बेटी, बहू, सास, प्रेमिका आदि सभी रूपों में सम्माननीय रही है। विद्या की देवी, धन की देवी, मोक्ष की देवी, शक्ति की देवी, पवित्रता की देवी आदि रूपों में नारी की ही वंदना की जाती रही है। वह परमात्मा को भी जन्म देने वाली जगतजननी कहलाई है। उसका हृदय त्याग, बलिदान, कल्याण, करुणा, ममता, कोमलता, प्रेम–भाव, मानवता की भावना आदि से परिपूर्ण रहा है। नर भी नारी से मिलकर ही पूर्णता को प्राप्त करता है। इसी से आदि शिव का अर्द्धनारीश्वर रूप विश्व प्रसिद्ध है। सदियों से नारी पुरुष की प्रेरणा शक्ति रही है। जिस कारण वह साहित्य के केंद्र में

विराजमान है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के साहित्य से होते हुए नारी ने हिंदी भाषा के साहित्य को भी नया आधार प्रदान किया। आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल से होकर आधुनिक काल के हिंदी साहित्य में नारी की उपस्थिति किसी न किसी रूप में अवश्य रही है। आज नारी ने समाज में अपनी विशेष पहचान बनाई है। यह भी सर्वमान्य सत्य है कि नारी जीवन अनेक उतार–चढ़ाव को पार करता आया है फिर भी उसने अपने जनकल्याण, पारिवारिक सद्भाव एवं कर्तव्यों के भाव का त्याग नहीं किया। वह कभी भी सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्रीय जागृति से पीछे नहीं हटी। अनेक लेखक और लेखिका ने अपने साहित्य में नारी जीवन के अनेक रूपों का चित्रण किया है। उनमें एक लेखिका है– शशिप्रभा शास्त्री। प्रस्तुत शोध आलेख में उनके उपन्यासों में चित्रित नारी–जीवन के विभिन्न रूपों का वर्णन किया जाएगा।

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी-जीवन का चित्रण

हिंदी साहित्य अपने प्रारंभ से ही नारी जीवन का विशद चित्रण प्रस्तुत करता रहा है। आदिकाल में नारियाँ वीर क्षत्राणी बनकर अपने पति को युद्ध भूमि में भेज देती थीं तथा स्वयं परिवार का दायित्व निभाती थीं। भक्तिकाल में नारियाँ समाज के तानों को सहन करती हुई भी सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करती रही। रीतिकाल में वह कामी पुरुष की कामवासना का केंद्र बनी तो आधुनिक युग में आकर वह अनेक विडंबनाओं का शिकार हुई। साथ ही साथ उसमें जागृति का भाव भी पैदा हुआ। वह अज्ञानता की बेड़ियों को चीरती हुई, शिक्षा ग्रहण कर, नवीन समाज की निर्मात्री बनी। अब वह भेदभाव के खिलाफ उठ खड़ी हुई है। आज वह हर समस्या को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर रही है। नारी जीवन की इस संघर्षमयी कथा को अनेक विदुषियों ने अपने शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ. मंजुलता सिंह के शब्दों में, 'आधुनिक युग में नारी जहाँ आत्मनिर्भर हुई है वहाँ उस में भारतीय नारी के शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति अस्वीकार की भावना ने जन्म लिया है, फलस्वरूप इससे उद्भूत समस्याओं को वह चुनौती के रूप में स्वीकार कर रही है। विवाहित मातृत्व जहाँ नारी के लिए गौरव व नारीत्व की महत्ती चाहना थी, अब अविवाहिता मातृत्व की ओर भी भारतीय नारी उन्मुख होने लगी है, अविवाहित मातृत्व समस्या के रूप में नहीं दिखाई देता। अब एक चुनौती के रूप में नारी ने उसे स्वीकारा है।''

आज की नारी अपने जीवन में पैदा हो रही समस्याओं को एक अवसर